पुष्प (कविता)

वंदना वड्ढा

सारांश

प्रस्तुत कविता में कवयित्री ने फूलों के महत्व के बारे में बताया है। फूल खुद तो सुगंधित होते ही हैं और साथ ही साथ चारों ओर भी सुगंध फैलाते हैं। यह देखने में अलग-अलग होते हैं, किंतु एक साथ मिलकर माला बन जाते हैं। हर समय इनकी भूमिका बदलती रहती है। जिस किसी भी रूप में हमें इनकी आवश्यकता होती है, उस रूप में ये हमारे लिए उपस्थित रहते हैं। हमारी माँग के अनुसार ये कभी पंखुड़ियों के रूप में उपस्थित होते हैं तो कभी गुलदस्ते के रूप में। इस प्रकार ये सबकी पूर्ति करते हैं।

पुष्प की अलग-अलग भूमिकाओं को रेखांकित करते हुए कवयित्री आगे कहती हैं कि कहीं किसी अवसर पर धागे के साथ गूँथकर हम इनसे माला बनाते हैं तो कहीं किसी मंदिर या दरगाह पर हम इन्हें चढ़ाते हैं। हमारे लिए शुभ संदेश पहुँचाने वाला भी पुष्प बन जाता है। वीर पुरुषों के स्वागत और सम्मान में इन्हें पथ पर बिखेर दिया जाता है। कभी किसी मृतक के सम्मान में श्रद्धांजलि देने के लिए ये प्रयुक्त होते हैं। अपने किसी प्यारे या खास के जन्मदिन के समय इन्हें हम तोहफे के रूप में काम में लाते हैं। विभिन्न रोगों की चिकित्सा के लिए दवा के रूप में भी इनका प्रयोग किया जाता है। विवाह के समय इनके द्वारा दूल्हा-दुल्हन का हार बनाया जाता है। अतः पुष्प हमारे सुख-दुख दोनों ही अवसर के साथी हैं जो हमारा साथ नहीं छोड़ते ——

"मौका खुशी का हो या गम का
पुष्प सदैव मानव का साथ देते हैं।"

दीर्घोत्तरीय प्रश्न 3 Marks

1. फूलों का हमारे जीवन में क्या महत्व है?

उ०→ फूलों का हमारे जीवन में विविध महत्व है। ये हमारे सुख-दुख दोनों ही अवसर पर साथ देते हैं। सुख के समय उपहार देने में, शुभकामनाओं का संदेश देने में, किसी उत्सव या त्योहार के समय घरों को सजाने में, मंदिरों में देवी-देवताओं को चढ़ाने में प्रयोग किए जाते हैं। दूसरी ओर दुख के समय मृत-शय्या (सेज) को सजाने में, मृतक को श्रद्धांजलि देने में तथा शहीदों के सम्मान में चक्र आदि समर्पित करने में प्रयोग होते हैं। इस प्रकार फूल हमारे जीवन के हर एक अवसर के साथी हैं।

2. फूलों के साथ काँटों का होना क्या महत्व रखता है?

अथवा,

फूलों के साथ काँटों का होना सकारात्मक सोच है या नकारात्मक? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उ०→ फूलों के साथ काँटों का होना सकारात्मक सोच है। फूल काँटों के साथ एक ही वृंत में रहते हैं, किंतु अपने गुणों को नहीं छोड़ते। उनमें वैसी ही कोमलता रहती है, खुशबू रहती है जैसी पहले थी। उसी प्रकार मनुष्य को अपने अच्छे गुणों को बनाए रहना चाहिए और बुरे लोगों के साथ रहकर भी अपने सद्गुणों को नहीं छोड़ना चाहिए, बल्कि अपने गुणों को समाज के कल्याण के लिए लगाना चाहिए।

Edit with WPS Office

Edit with WPS Office